अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

नारीलोक

अप्रैल 2022

अंक 285

अध्यक्षीय कार्यालय
NEELAM SETHIA
28/1 Shivaya Nagar 4th Cross
Reddiyur, Salem 636004. (TN)
9952426060
neelamsethia@gmail.com

लिखें शक्ति की नई ऋचाएं, अनुशासन के दीप जलाएं

ज्योति वो गण की विशेष... ढूंढे अखियां अनिमेष...
कहां वो विलीन हुई ...

एक विराट चेतना... शून्य हो गई

शासन माता तुम्हें प्रणाम

तुलसी कृति
महाप्रज्ञ धृति

महाश्रमण पूजित
शासनमाता गुंफित

प्रशांत वैराग्य
शांत कषाय

गुरु शरण धारणा
सारणा वारणा

तुलसी संपादक
महा अवदायक

मंथन मथनी
नवनीत लेखनी

अविरामी कर्तृत्व
अभिरामी व्यक्तित्व

प्रकांड पंडिताई
प्रबल पुण्याई

तपिश भक्ति की
तेजस्वी शक्ति की

माँ स्वरूपा
मन जगदम्बा

विनम्र समर्पण
उर्जित कण कण

अजब अनुशासन
गज़ब प्रशासन

अथक यायावर
सहयात्री गुरुवर

सतत पुरुषार्थ
जगत परमार्थ

मनहर लालित्य
यायावर साहित्य

कवित्व अनूठा
काव्य जग ज्येष्ठा

पाप भीरू
साधना सुमेरु

पावक करणी
तारक वैतरणी

तेज आभावलय
अलौकिक वात्सल्य

प्रकृति स्तंभित
ब्रह्मांड श्रद्धासिक्त

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की भावप्रणत् श्रद्धांजलि

अष्ट सिद्धियों से शोभित साध्वीप्रमुखा को प्रणाम,
उस असाधारण छांव तले पाया मैंने सतत विश्राम।
आंखें खोज रही उस दृष्टि को जिन्हें देख स्वयं पर विश्वास हुआ,
जिनकी सबल प्रेरणाओं से हर निराशा पर अविश्वास हुआ।
वरद हस्त की उस ऊर्जा से मस्तक अब वंचित हुआ,
सफर के मध्य मानो उत्साह का अविरल स्रोत बाधित हुआ।।

Don't think of her as gone away, her journey's just begun
Life holds so many facts, this earth is only one.
Just think of her as resting from the all the pains and tears
In a place of warmth where there are no days or years.
Think how she must be wishing that we could know today
How nothing but our sadness, can really pass away.
And think of her as living in the hearts of those she touched
For nothing loved is ever lost and she was loved so much.

सूना सूना सा कोई जहान कर गया
यादों को मगर अपनी हमारे नाम कर गया,
ढूंढेंगे जिन्हें हम अब चांद सितारों में
वो शख्स हमारे नाम सारा आसमान कर गया।
साथ थे कल तक, मगर आज यूं दूर है
नियति के आगे तो हम सभी मजबूर हैं,
जाने वाले को तो जाना ही था मगर
जाते जाते वो हमारे दिल में मकान कर गया,
सूना सूना सा कोई जहान कर गया।

सोच रहे हैं क्या कहें
उस पुण्यात्मा के अभिवन्दन में,
प्रतिपल धर्मसंघ की लौ जली
जिसके प्रत्येक स्पन्दन में।
तीन गणमाली के साथ रही
सदा इस गण उपवन में,
सुरभित की, फैलायी सुवास,
तेरापंथ नन्दन वन में।

चन्देरी की चन्द्रकान्त मणि

बिल गेट्स दुनिया का वह मशहूर शख्स है, जिसकी पहचान सबसे बड़े लक्ष्मी पुत्र के रूप में होती है। जब उनसे पूछा गया – दुनिया में सबसे अधिक अमीर व्यक्ति कौन है? उन्होंने बड़ी संजीदगी के साथ कहा – दुनिया में वह व्यक्ति अमीर है, जिसके पास पैरों की जगह धरती–सा उदार दिल है। धरती का एक नाम वसुन्धरा है। वह बेशकीमती दौलत का अखूट खजाना है। धन का एक प्रतीकात्मक नाम है – कनक। परम पूज्य आचार्य तुलसी ने मुझे पृथ्वी सा उदार व अकूत सम्पदा की मालकिन महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी की उपपात में बैठकर सेवा करने का अवसर देकर मेरी तकदीर को स्वर्णिम बना दिया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी के लिए गुरु दृष्टि ही जीवन की सृष्टि थी, सुख की वृष्टि थी, आत्मा की संतुष्टि थी। उनमें कर्ताभाव के स्थान पर सदैव गुरुकृपा–भाव का बहता दरिया देखा जा सकता था। उनका झील–सा गहरा मन विकल्पों से चंचल नहीं होता था। योगी–से तपस्वी मन में यश, पद, नाम की निस्पृहता उनके व्यक्तित्व की विरल पहचान थी। आत्मकेन्द्र में स्थित रहकर विविध आयामी परिधि की परिक्रमा करने वाली साध्वीप्रमुखाजी एक ऐसी महान अध्यात्म–साधिका थी, जो दायित्व के उच्चासन पर प्रतिष्ठित होते हुए भी नैसर्गिक विनम्रता से सुरभित थी। विशिष्ट अलंकरणों से सुसज्जित उनके आत्मिक सौन्दर्य को सादगी, सरलता और सहजता शतगुणित करने वाले घटक थे, हार्दिक समर्पण गुरु–विश्वास का माइल स्टोन था, प्रखर बौद्धिक क्षमता में मानवीय संवेदना का पवित्र पराग था। अनुशासन पसन्द होने पर भी अनुशासन की डोर को कब कसना और कब ढील देना, वे बखूबी जानती थी। दिल की कोमल होने पर भी सिद्धान्तों/उसूलों के लिए वे चट्टान–सी मजबूत थी।

समग्र दृष्टि से परिपूर्ण और पवन श्रमण–संस्कृति की उच्चतम परम्परा और जीवन मूल्यों से प्रतिबद्ध इस अतिशायी व्यक्तित्व में अपरिमित गुणों का समवाय देखकर लगता था कि साध्वीप्रमुखाश्रीजी चन्देरी की चन्द्रकान्त मणि है। एक ऐसी विलक्षण मणि होती है, जिस पर शरद रात्रि के शशांक की ज्यों–ज्यों श्वेत रश्मियां धवलिमा बिखेरती है, वह मणि उतनी ही चन्द्रकान्तमणियों का निर्माण कर देती है। तेरापंथ के महान शशधर आचार्यत्रयी की पावन अनुग्रह–रश्मियां प्राप्त कर साध्वीप्रमुखाजी तेरापंथ धर्मसंघ को हिमालयी ऊंचाई देती रही। नमन चन्देरी की चन्द्रकान्तमणि को।

वस्तुतः वह तेरापंथ धर्मसंघ की अनमोल संपदा थी। तेरापंथ महिला समाज पर तो उनके अनन्त उपकार हैं। उनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन और वात्सल्य से परिपूर्ण मार्गदर्शन में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल ने अभूतपूर्व प्रगति की। आज उनके बिना तेरापंथ महिला समाज की कल्पना भी अत्यंत पीड़ादायी है। हमारे बीच शासन माता के ना रहने का अर्थ है एक घने व विशाल बरगद के पेड़ का न रहना, जिसकी सघन छाया तले हम असीम सुख का अनुभव करते थे। एक सुसंस्कृत, प्रगतिशील महिला समाज के जो सपने वो हमेशा देखा करती थी, जो कल्पनाएं वो हमेशा बुना करती थी, उन सपनों और कल्पनाओं को यथार्थ का धरातल प्रदान कर हम शासन माता के प्रति अपनी सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

साध्वीप्रमुखाजी की आत्मा की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु आध्यात्मिक मंगलकामनाएं।

श्रद्धाप्रणत्

साध्वी कल्पलता

साध्वीप्रमुखाश्रीजी को समर्पित भावांजलि

ऋजुता और विनम्रता से सराबोर आचरण
समत्व योग का दिया उत्कृष्ट उदाहरण

प्राण तन मन थे समर्पित एक तेरा पाने इशारा
जिन्दगी के इस सफर को मिल रहा था ज्योति सहारा

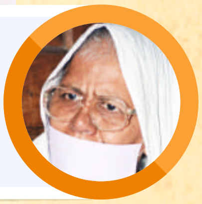

एक व्यक्तित्व जिसे

नभ की बिजलियों ने
उजालों से सजाया
नदी की कलकलाहट
ने श्रद्धा गीत गाया

समन्दर ने उपहत की
अपनी असीम गहराई
हिमालय के शिखरों ने
सौंपी असीम उंचाई

एक युग जो चल रहा था
अपनी रफ्तार के साथ
एक उर्जा पुरुषार्थ के
प्रबल हस्ताक्षर के साथ

एक छांव जो तपिश में
तैनात थी शीतलता के साथ
एक ज्योति जो प्रकाशित थी
उजालों के शंखनाद के साथ

एक देदीप्यमान सूरज
बादलों की ओट हो गया
एक उर्जास्रोत जाने क्यों
अचानक थम गया

एक उजली छवि
अचानक यूं तिरोहित हो गई
एक विराट चेतना सदा के
लिए शून्य में खो गई

आपके सान्निध्य के मीठे पलों को
कल आज और कल जीते चले जाएंगे...
हर पल तुम्हें हमारे साथ ही पाएंगे

भावप्रणत्
अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

अध्यक्षीय अनुभूति

भावप्रणत श्रद्धांजलि

वन्दन संवेदनदर्शी 'कला' को
वन्दन क्रान्तदर्शी 'कनकप्रभा' को
वन्दन भक्तिदर्शी 'साध्वीप्रमुखा' को
वन्दन पुरुषार्थदर्शी 'महाश्रमणी' को
वन्दन अनासक्तदर्शी 'असाधारण साध्वीप्रमुखा' को
वन्दन सूक्ष्मदर्शी 'शासन माता' को
वन्दन... अभिवन्दन... विनम्र भावप्रणत श्रद्धांजलि

यह संसार प्रकृति के नियमों के अधीन है। मृत्यु भी प्रकृति का अवश्यंभावी नियम है। जीवन और मरण के मध्य क्षण-क्षण की कड़ियां जोड़ते हुए मनुष्य कैसी श्रृंखला बनाता है, किस प्रकार का जीवन जीता है, वही उसे साधारण या असाधारण बनाता है। जब जीवन में स्व आत्म-कल्याण और पर आत्म-कल्याण का प्रतिबोध हो तो उसके मध्य जो जीवन जीया जाता है, वही जीवन विश्वपटल पर सही मायने में अपने अमिट हस्ताक्षर अंकित कर जाता है।

किसी के तेज, प्रभाव या अन्य किसी गुण के अत्यन्त विकसित होने से वह व्यक्ति विशिष्ट एवं वन्दनीय बन जाता है। जहां तेज है, प्रभाव है, वहां हम नतमस्तकता और आदर भाव स्वतः परिलक्षित होते हैं। साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ऐसी ही विशिष्ट श्रेणी की प्रथम पंक्ति में आने वाली व्यक्तित्व थी। अपने जीवन को पल्लवित करती हुई, बहुमुखी प्रतिभाओं को उजागर करती हुई, असाधारण व्यक्तित्व का जीवन जीया। जीवन को सचेत और कलात्मक ढंग से आबद्ध किया।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ऐसी विरल विभूति थी, जिन्होंने स्वयं के आत्म-कल्याण सहित जन-जन को आत्म-कल्याण हेतु प्रतिबोधित किया। एक ऐसी विलक्षण लौ जिसने संपर्क में आने वाले हर व्यक्ति के मार्ग को प्रज्ज्वलित करने का सार्थक प्रयास किया। एक ऐसा करूणालय जहां सदैव ममत्व की व्युत्पत्ति रही। एक ऐसी शीतल छाया जिसने अपने छांव तले हर व्यक्ति को सुकून का अंतर्बोध होता।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने जीवन को त्यागमय, समर्पणमय और ममतामय बनाते हुए लोक-कल्याण में अपना सर्वस्व न्यौछावर किया एवं तीन आचार्यों की सामीप्यता प्राप्त करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ में अमिट छाप का मुद्रांकन किया।

तेरापंथ महिला मंडल के लिए साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी एक अविरल अनवरत निर्माण का हेतु रही। आचार्य और महिलाओं के मध्य प्रमुखाश्रीजी ने सदैव एक मर्यादित सेतु का कार्य किया। नारी जाति के उत्थान एवं उन्नयन तथा रूढ़िवादिता से महिला समाज को उन्मुक्त करने में प्रमुखाश्रीजी ने प्रतिपल स्वयं को आबद्ध रखा।

महिला मंडल की नींव से शीर्षस्थ मंजिल के निर्माण में लगी प्रत्येक ईंट पर प्रमुखाश्रीजी के अमिट हस्ताक्षर हैं। महिलाओं को फर्श से अर्श तक पहुंचाने में प्रमुखाश्रीजी ने अपना सर्वस्व लगा दिया।

वे एक ऐसी...

ज्योति प्रपात थी जिन्होंने रोहिणी की हर रश्मि को ज्योतित किया
नव प्रभात थी जिन्होंने केसरिया रंग को हर दिन उत्सर्जित किया
आर्ष वाणी थी जिनके आलोक ने महिला मंडल को प्रकाशित किया
प्रेरणा प्रगति थी जिन्होंने मंडल को फर्श से अर्श का दिशादर्शन दिया
अमिट हस्ताक्षर थी जो हर बहन के हृदय अंतःस्तल पर अंकित रहेगा
आशीर्वाद एवं वरदहस्त थी जिसका मंडल सदैव अनुभूति करता रहेगा
शिल्पकार थी जिन्होंने मंडल को गढ़ने में सृजनात्मक शक्ति लगाई

आपकी विनम्रता, सौम्यता, सहजता, धैर्यता, क्षमता एवं बौद्धिकता के अंश मात्र भी अपने में समेट सकें, तो हम सबका जीवन धन्य हो जाएगा। ऐसे व्यक्ति विरले ही होते हैं जिनके चले जाने से एक व्यक्ति नहीं, एक परिवार नहीं, एक शहर नहीं, पूरा समाज शून्यता का अनुभव करता है। आप द्वारा प्रदत्त पथदर्शन ने सदैव मेरे जीवन की उचित दिशा निर्धारित की है।

मेरी ऊर्जा को, मेरी लेखनी को, मेरे व्यक्तित्व को, मेरी कार्यप्रणाली को, मेरे विचारों को, आपने सदा सराहते हुए संवारा था। सराहते हुए संवारना अपने आप में बहुत बड़ी कला है, जिसमें कुछ विरले ही निष्णात होते हैं। आपके व्यक्तित्व की विशालता और व्यापकता ने मुझे ही नहीं, हर महिला को उत्प्रेरित किया है। आप जैसे व्यक्तित्व की विशालता और व्यापकता प्रतिपल मुझे उत्प्रेरित करती थी। आप ऐसा अजस्र स्रोत थी जिससे सिंचन पाकर जीवन्तता की अनुभूति होती थी।

कनक समान खरे कनकप्रभाजी के महाप्रस्थान से महिला समाज में एक रिक्तता आई है जिसे आपूरित करना निकट भविष्य में कठिन जरूर है। ऐसी महान विभूति को सहस्रों वन्दन... सहस्रों प्रणाम... भावांजिल, श्रद्धांजलि...

श्रद्धाप्रणत्

नीलम सेठिया

संस्मरणों के स्पन्दन... राष्ट्रीय नेतृत्व के

ज्ञान, दर्शन, चरित्र इस रत्नत्रयी की आराधना में अहर्निश संलग्न ऐसी महासाधिका को पाकर पूरा तेरापंथ सकल समाज एवं सम्पूर्ण महिला जगत अपने आपको युगों–युगों तक गौरवान्वित महसूस करता रहेगा। मैं सोचती हूँ किसी भव में मैंने बहुत पुण्य अर्जित किए थे, जो इस भव में तुलसी युग में मैंने जन्म लिया। उनकी महान अनुपम कृति 'कला' का वात्सल्य मिल जाए तो कहना ही क्या? उनके ऐसे वचन कि नारी रत्न, श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती तारा बाई का जीवन और सेवाएँ संघीय विकास के हर आयाम में सुनहरे अक्षरों में अंकित है। यह युगल पूज्य प्रवर गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी तथा युगप्रधान आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का विशेष कृपापात्र है। आचार्य श्री महाश्रमण जी के हृदय में भी विशिष्ट स्थान है। ऐसा योग विरल व्यक्तियों को मिलता है। ऐसे शब्द प्रमुखाश्रीजी के मुखारबिंद से सम्प्रेषित हो, कौन व्यक्ति अपने भाग्य की सराहना नहीं करेगा?

घटनाएँ अनेक – भाषा एक, हर दुःख की घड़ी में उन्होंने मुझे सम्बल प्रदान किया। विपत्तियाँ जीवन में बहुत आई, लेकिन जब भी उनके उपपात में पहुँचती, उनका वरदहस्त मेरे मस्तिष्क पर आता। जीवन की कठिनाईयों को झेलने की मुझ में एक नयी शक्ति, ऊर्जा प्राप्त हो जाती। ऐसी माँ, शासनमाता का चले जाना मेरे जीवन की बहुत बड़ी क्षति है। एक ऐसी रिक्तता जो शायद ही कभी भर पाए।

तारा सुराना (पूर्वाध्यक्ष – अभातेममं)

महिला समाज के उत्तरोत्तर विकास के लिए साध्वीप्रमुखाश्री हमेशा गतिमान रही। महिला समाज का विशाल नेटवर्क आपके मार्गदर्शन में निरन्तर प्रगति के सोपानों पर आरोहण करता रहा। मेरे स्वयं के निर्माण में पूज्यवरों की कृपादृष्टि एवं महाश्रमणीजी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। सन् 1995 में आचार्य तुलसी के दिल्ली चातुर्मास में मैंने अध्यक्षीय दायित्व संभाला। एक दिन सायंकालीन समय में प्रमुखाश्रीजी के समक्ष मैंने नारीलोक की कठिनाई के बारे में बताया। मुझे लिखने का अभ्यास नहीं था, कोई पूर्व तैयारी नहीं थी। उस समय आपने मुझे अमूल्य सुझाव प्रदान किए और साध्वीश्रीजी को मेरे सहयोग हेतु नियोजित किया। प्रथम अंक जब निवेदित किया तो आपने पुनः कुछ अमूल्य सुझाव दिए। आपका आशीर्वाद और आत्मीयता से मेरा हौसला और भी बढ़ गया। विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ। उनसे मिला दिशाबोध आज भी मुझे नया आलोक प्रदान कर रहा है। विकास के सफरनामे में आपके मार्गदर्शन से ही महिला समाज निरन्तर विकास की ओर अग्रसर हुआ। ऐसे विरल विलक्षण आत्मा को श्रद्धा भरा प्रणाम।

शान्ता पुगलिया (पूर्वाध्यक्ष – अभातेममं)

सन् 1991 लाडनूं में अभातेममं की नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्रीमती तारा सुराणा ने महामंत्री पद पर मेरा मनोनयन किया। अवस्था भी छोटी थी तथा मेरी मानसिकता भी नहीं बन रही थी। अतः एक दिन मैंने प्रमुखाश्रीजी से निवेदन किया कि मुझे कुछ नहीं आता है, मैं तो बुद्धू हूं। मुस्कुराते हुए मेरे सिर पर ओगा रखते हुए प्रमुखाश्रीजी ने कहा, 'हमें तो बुद्धू ही चाहिए।' वह ओगा मानो मेरे लिए मां का आंचल बन गया। तेरापंथ धर्मसंध एवं महिला मंडल में प्रवेश का मेरा वह शैशवकाल था। लेकिन उस विरल विभूति के मातृत्व का साया मेरे जीवन का अनुपम वरदान बन गया जो मेरा हाथ पकड़ सतत विकास के मार्ग पर ले जाता रहा। सन् 2001 में बीदासर में मंडल की मुखपत्रिका नारीलोक में मेरा अध्यक्षीय पढ़ते हुए उन्होंने कुछ संशोधन फरमाया तो उनके मार्गदर्शन ने मुझे जागरूक बना दिया। उनके द्वारा प्रदत्त स्वाध्याय की प्रेरणा ही मेरे लेखन व संपादन का आधार बनी। मेरी सारी भावनाएं और समस्याएं उनके पास पहुंच कर समाहित हो जाती। शासन माता सत्य का महासागर थी जिसका कोई ओर–छोर नहीं, उसका एहसास केवल रूह को होता है :

ना ये बुझती है, ना रुकती है, ना ठहरी है कहीं
नूर की बूंद है सदियों में बहा करती है।

उस असाधारण नूर की बूंद का अमिट अहसास दिलों में समाया है, उसके लिए हर शब्द निःशब्द हो रहा है, भाव भरा श्रद्धाप्रणत!

पुष्पा बैंगानी (पूर्वाध्यक्ष – अभातेममं)

शासन माता महाश्रमणी साध्वी प्रमुखा कनक प्रभा जी वत्सलता की भण्डार थी। जब अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल में मैंने अध्यक्षीय दायित्व संभाला, उस समय मैं बहुत चिन्तित थी कि कैसे काम करूं, क्या योजना बनाऊं जिससे संस्था की गरिमा बढ़े। मैं तो दायित्व के लिये भी आनाकानी कर रही थी, पर श्रद्धेय महाश्रमणी जी ने फ़रमाया कि सब अच्छा हो जायेगा, हमें भरोसा है तुम पर। मैं उस समय थोड़ी अस्वस्थ भी थी। पर उनका मार्गदर्शन बराबर मिलता रहा, वे मेरा हौसला बढ़ाती रही। यहां तक कि एक–एक माह की लम्बी यात्राएं भी हुई। क्षेत्रों में जाकर शाखा मंडलों की सार संभाल भी आसानी से हो गयी। कोई बाधा नहीं आयी।

एक तरफ गुरु कृपा बरस रही थी, दूसरी तरफ महश्रमणी जी का प्रोत्साहन मुझे आगे बढ़ाता रहा। स्वयं समझाते कि आगे क्या करना है। संस्था संचालन हेतु जो उनका जो मार्गदर्शन रहा, मैं उनके लिये सदैव कृतज्ञ रहूंगी। उन्होंने हर बहिन को रक्षिता व रोहिणी बनने का प्रशिक्षण दिया। ऐसी शक्ति संवर्धन करने वाली महिला गौरव श्रद्धेय महाश्रमणी को अन्तहीन श्रद्धासिक्त प्रणाम।

सुशीला पटावरी (पूर्वाध्यक्ष – अभातेममं)

संस्मरणों के स्पन्दन... राष्ट्रीय नेतृत्व के

अनेक दुर्लभ गुणों से महिमा मंडित सृजनधर्मिता प्रमुखाश्रीजी का एक विशिष्ट गुण यह भी था कि कब, कैसे, किसे, किस समय क्या कहना है – यह गुर उन्हें लब्धि के रूप में प्राप्त था। 17 जनवरी 1987 को दिल्ली में मैं अपने जन्मदिन पर मंगलपाठ सुनने आचार्य तुलसी के चरणों में उपस्थित हुई। प्रमुखाश्रीजी भी गुरु सन्निधि में उपस्थित थी। मुझे मंगलपाठ सुनाते हुए गुरुदेव ने फरमाया कि अपनी क्षमता का उपयोग करते हुए केन्द्रीय मंडल का दायित्व संभालना है। तदुपरांत साध्वीप्रमुखाश्रीजी मुझे टटोलती रही पर परिस्थितिवश बात टलती गई।

सन् 2005 में आचार्य महाप्रज्ञजी के दिल्ली चातुर्मास में प्रमुखाश्रीजी ने सलक्ष्य मुझे सेवा कराई। मैंने अपनी उलझन बताई कि नारीलोक में प्रति माह अध्यक्षीय लिखना पड़ेगा, वह भारी लगता है। मधुर मुस्कान बिखेरते हुए कहा, 'भोली! इरी के चिन्ता है, कुर्सी अपने आप कोतवाली सिखा देसी।' गुरु कृपा से उसी वर्ष राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने का सौभाग्य मिला। अध्यक्षीय कार्यकाल में प्रमुखाश्रीजी ने फरमाया कि विसर्जन पर सलक्ष्य ठोस काम अभियान बनाकर करना है। उनकी स्वयंसिद्धा वाणी व सटीक मार्गदर्शन का प्रसाद था कि एक वर्ष के अन्तराल में आचार्य महाप्रज्ञ ने प्रवचन में फरमाया, 'बहनों ने विसर्जन योजना पर चमत्कार जैसा कार्य किया है।' अमृत बरसाती वो आंखें एवं अमल–धवल और मोहक आभामंडल की छवि आंखों से ओझल हो गई पर आपकी चैतन्य रश्मियां हमें हर पल प्रेरित करती रहेगी।

सायर बैंगानी (पूर्वाध्यक्ष – अभातेममं)

साध्वीप्रमुखाश्रीजी के कुशल नेतृत्व ने जहां साध्वी समाज में सर्वांगीण विकास के शिखरों को छूने का प्रयास किया, वहीं महिला समाज में भी चौमुखी विकास की डगर पर चरणन्यास किसा।

सन् 2008 में आचार्य महाप्रज्ञजी के जयपुर चातुर्मास में षष्ट कन्या अधिवेशन के प्रसंग पर हमारे सामने एक कठिनाई उपस्थित हुई जिसे प्रमुखाश्रीजी ने सहज ही आसान कर दिया। किन्हीं कारणों से अधिवेशन प्रवास स्थल से दूर आयोजित हुआ। हर सत्र में कन्याओं का बस द्वारा प्रवास स्थल लाना और ले जाना एक दुरूह कार्य लग रहा था। कृपालु महाश्रमणीजी ने गुरुदेव से आज्ञा लेकर स्वयं अधिवेशन स्थल पर पहुंच सान्निध्य प्रदान कराने की महती अनुकंपा कराई। हमारे लिए पुनीत आशीर्वाद और अविस्मरणीय कृपा दृष्टि का वरदान बन गया।

महाश्रमणीजी का उज्ज्वल धवल व्यक्तित्व अनेक गुणों का भंडार है। इस युग की चन्दनबाला कहूं या पावन दुर्गा शक्ति कहूं, बस वंदन अभिवंदन के भावों से विभोर होकर आपको आदर्श आराध्या मानकर आपके श्रीचरणों में श्रद्धांजलियुक्त वंदना समर्पित करती हूं।

सौभाग बैद (पूर्वाध्यक्ष – अभातेममं)

वैसे तो प्रमुखाश्रीजी का वात्सल्य, उनकी ममता हर राष्ट्रीय अध्यक्ष को मिलती है पर प्रतिकूल परिस्थितियों में जो हमें संभालता है, उसे हम भूल नहीं पाते हैं। मार्च 2011 में महिला सशक्तिकरण और कन्या सुरक्षा योजना के प्रचार–प्रसार हेतु बड़े स्तर पर एक मंचीय कार्यक्रम का आयोजन कई राज्यों में हुआ। कार्यक्रम हमारी उम्मीदों के अनुरूप सिद्ध नहीं हुआ और काफी प्रतिक्रियाएं प्रमुखाश्रीजी के पास पहुंची। दर्शन करने के संवाद से चिंतित स्थिति में उनके उपपात में पहुंची। उन्होंने जो फरमाया वह मेरे लिए संजीवनी बन गया। उन्होंने फरमाया कि कोई भी नया कार्यक्रम करते हैं तो सफल या असफल होने की दोनों संभावनाएं रहती है। हम आचार्य तुलसी को याद करें उन्होंने कितने नए काम किए तथा संघ के भीतर और बाहर की प्रतिक्रियाएं झेली, हिम्मत से सामना किया। तुम मन छोटा न करते हुए यथासंभव इस कार्यक्रम को जल्द ही समेट लो। उस समय प्रमुखाश्रीजी का जो वात्सल्य, संबल, आलंबन, मार्गदर्शन मुझे मिला उसे मैं जीवनपर्यन्त नहीं भूल पाउंगी। मुझे आधार दिया, आत्मविश्वास बनाए रखने और संस्था को संगठित बनाए रखने का।

कनक बरमेचा (पूर्वाध्यक्ष – अभातेममं)

श्रद्धेय महाश्रमणी साध्वी कनकप्रभाजी ने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल को सशक्त बनाने के लिये अनवरत प्रयास किया। उनके लिये संस्था प्रमुख थी। चाहे कोई अध्यक्ष हो, प्रत्येक पर अनन्त कृपा बरसाती हुई उसका मार्गदर्शन करती। संघ समर्पण व गुरु भक्ति के संस्कारों से संपोषित करती। मैं जब भी अपने अध्यक्षीय कार्यकाल में कोई भी योजना लेकर आती तो फरमाती, जाओ पहले गुरुदेव को निवेदन करो। गुरुदेव जो भी दृष्टि दिलवाते वे उसी रूप में क्रियान्वित करने को कहती।

एक बार जब कल्याण परिषद की पहली मीटिंग आचार्य श्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में रखी गयी। गुरु दर्शन कर एक सप्ताह पहले घर पहुंची थी। असमंजस में थी कि क्या करूं? रास्ते में सेवा कर रही बहिन से महाश्रमणीजी को निवेदन करवाया कि अभी जाकर ही आई हूं, आप फरमाये क्या करना है। उन्होंने फरमाया कि गुरु निर्देश पर सवाल नहीं किया जाता। मुझे समाधान मिल गया। मैं तुरन्त वहां पहुंची। पूज्य गुरुदेव ने भी शुभ दृष्टी बरसाई। कृपा का प्रसाद पाकर निहाल हो गयी। उस दिन से संकल्प किया कि गुरु दृष्टि ही हमारा लक्ष्य होना चाहिये। इस प्रकार समय समय पर वे हमें समझाती और हमारा मार्गदर्शन करती। ऐसी वत्सलता की महागंगा को हृदय से श्रद्धा भरा सलाम। हे! शासन माता आपकी जीवनी हमारे लिए संजीवनी बन जाये, दो ऐसा आशीष अमर आपके जैसे हम बन पायें।

डॉ सूरज बरडिया (पूर्वाध्यक्ष – अभातेममं)

संस्मरणों के स्पन्दन... राष्ट्रीय नेतृत्व के

समस्याएं सभी के जीवन में आती रहती हैं, पर समाधान सभी के पास नही होता। और समस्या तब ही समस्या होती है, जब समाधान नहीं होता। महिला मंडल के अध्यक्ष के रूप में मेरा समय एक नई प्रेरणा के रूप में था। एक बार मैं कार्य और उसके संयोजन को लेकर बहुत बड़ी समस्या में थी, समाधान था ही नहीं। जैसे–तैसे साहस जुटा कर प्रमुखाश्रीजी के पास गई। सोचा यही था कि एक बार चर्चा करके उनसे ही उपयुक्त समाधान पूछुंगी। उनके स्नेह और सान्निध्य का बखान करना तो मुश्किल है। किंतु उस समस्या की घड़ी में मुझे उनके पास शांत भाव से बैठने के 15 –20 मिनट मिले। वो किसी कार्य में व्यस्त थी और मैं अपनी समस्या में। मैंने महसूस किया कि जैसे–जैसे समय बीत रहा था, समस्या का अस्तित्व ही मुझे शून्य लग रहा था। और मेरे अंदर एक अजीब सा विश्वास और अनुभूति जन्म ले चुकी थी। समस्या अब थी ही नहीं।

इतने में आवाज आई, तुम कुछ कह रही थी कल्पना। अब मेरे पास न प्रश्न था, न ही उत्तर। सच में एक असाधारण प्रभा थी, साध्वी प्रमुखाश्रीजी। जिनके सान्निध्य में ही समाधान था। श्रद्धा सिक्त नमन।

कल्पना बैद (पूर्वाध्यक्ष – अभातेममं)

राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने का मैंने कभी स्वप्न भी नहीं देखा था। जब भी दायित्व ग्रहण करने की बात आती, मैं प्रायः प्रमुखाश्रीजी के चरणों में निवेदन कर मार्गदर्शन प्राप्त करती। वे सदैव एक ही बात फरमाते, 'सौहार्दपूर्ण वातावरण में यदि समर्थन होता हे तो पीछे नहीं हटना चाहिए।' राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने से पूर्व भी मेरे भीतर अनेक उलझनें, चिंता व समस्याएं थी, मगर प्रमुखाश्रीजी की मूक प्रेरणा व ऊर्जा से ओतःप्रोत आशीर्वाद ने मेरा पथ प्रशस्त किया और मैंने दायित्व स्वीकार किया। उनकी असीम अनुकंपा के आकाश में उड़ान भरने के लिए मानो मुझे पंख मिल गए।

दो वर्ष में संभवतः 100 दिन का समय उनकी ममता के आंचल तले व्यतीत करने का सौभाग्य मुझे मिला। संस्थागत उपलब्धियों के प्रति प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्होंने फरमाया, 'अभी संस्था का उदयकाल चल रहा है।' समय–समय पर प्रस्फुटित अमृत वचन मेरे लिए बन गए संजीवन।

ऐसी परम उपकारी ममतामयी शासनमाता की पवित्र आत्मा को अंतहीन श्रद्धा समर्पित करते हुए यही कामना करती हूं कि उस महान विभूति के असीम गुणों में से कुछ गुण मेरे भीतर भी संक्रांत होते रहें और मैं भी उनके आदर्शों पर चलने का तनिक मात्र भी प्रयास कर सकूं।

कुमुद कच्छारा (पूर्वाध्यक्ष – अभातेममं)

साध्वीप्रमुखाश्री के वरदहस्त की ऊर्जा हमें सुचिन्तन की ओर अग्रसर करती रहेगी। ऐसी मां के चले जाने से धर्मसंघ में महनीय रिक्तता का अनुभव हो रहा है, जिसे भर पाना नामुमकिन है।

चार वर्ष तक महामंत्री एवं 2019–2021 में अध्यक्षीय पद के निर्वहन में जाने कितनी बार निकट से उपासना का अवसर मिला, रास्ते की सेवा का भी अवसर मिला। भीलवाड़ा चातुर्मास पश्चात् विहार में 22 नवम्बर को मैं रास्ते की सेवा में पहुंची। 24 नवम्बर को रास्ते में कुछ टेस्टिंग हुई जिसमें डी–डाइमर बढ़ा हुआ पाया गया। डॉक्टर के सलाह अनुसार उन्हें ट्रेन से जयपुर लाया गया। लगभग 4 घंटे तक ट्रेन के उस डिब्बे में उनके पास की सीट पर बैठी रही, ऐसा सौभाग्य मुझे मिला जिसे याद कर मन रोमांचित हो जाता है। ऐसे विरले क्षण मेरी जिन्दगी में पहली बार आए। मैं ऐसी मां को श्रद्धासुमन अर्पित करती हुई आध्यात्मिक मंगलकामना करती हूं।

पुष्पा बैद (निवर्तमान अध्यक्ष – अभातेममं)

संस्मरण... वह सुखद स्मृतियां जो विशेष को विशिष्ट बना दे, जीवन को सही दिशा दे दे, जीने की कला सीखा दे। स्मृतियों के दर्पण में 15 वर्षों में अनेक ऐसे संस्मरण साध्वीप्रमुखाश्रीजी के साथ हैं जो मेरी अध्यक्षीय यात्रा को प्रारंभ करवाने में योगभूत बने। लगभग 15 वर्ष पूर्व देश की अन्य संस्थाओं के साथ सघनता से जुड़ी हुई थी। अभातेममं के साथ अन्य संस्थाओं के लिए कार्य एवं प्रोजेक्ट डिजाइन किया करती थी। यह जानने के बाद साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने बड़े वात्सल्य के साथ मुझसे कहा था कि किसी मंजिल को पाना हो तो राह एक ही होनी चाहिए। भिन्न–भिन्न राहों पर चलने से मंजिल नहीं मिलती। अपनी प्रतिभा को एक ही दिशा में गति देने से ही अपेक्षित मंजिल शीघ्र मिलती है। उस दिन के पश्चात् मैंने अपनी शक्ति का नियोजन एक ही दिशा में करने का प्रयास किया। शायद इसी की फलश्रुति होगी कि आज ऐसी गौरवशाली संस्था के नेतृत्व का बागडोर संभालने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ। श्रद्धांजलि उस महान विभूति को जिन्होंने मेरे जीवन की दिशा निर्धारित की, भावांजलि उस मां को जिनके बिना चलने का प्रयास हम कर रहे हैं....

नीलम सेठिया (अध्यक्ष – अभातेममं)

संस्मरणों के स्पन्दन... राष्ट्रीय नेतृत्व के

रोशनी को तलाशते जिन्दगी के इस सफर में कुछ पड़ाव ऐसे आते हैं जहां ठहर जाने को दिल करता है या यूं कहूं उन पलों की ठण्डी फुहारें जीवन पर्यन्त सुकून बांटती है। दायित्व बोध के साथ संघीय सेवा का चार वर्ष का मेरा सफर उस मां के आंचल की शीतल छांह का वो मधुर एहसास है जिसने चिलचिलाती धूप में भी मेरे भीतर के भीगे समर्पण को अक्षुण्ण बना दिया। बात उन दिनों की है जब महाश्रमणीजी द्वारा रचित 'गांधी के पुण्य वतन में' गीत जन–जन के मुख पर था। संस्था द्वारा विशेष आवरण भारतीय डाक विभाग द्वारा जारी किए जाने की योजना मूर्त रूप ले रही थी। डेढ़ महीने का कार्य करने हेतु हमें मात्र 10 दिन ही मिले थे। लगभग सात दिन में सारी तैयारी कर मैं एवं अध्यक्ष श्रीमती सौभागजी बैद बीदासर पूज्यप्रवर की सन्निधि में पहुंचे। गुरु दर्शन पश्चात् प्रमुखाश्रीजी के पास सब कुछ निवेदन किया तो आपश्री ने फरमाया कि यह बहुत अच्छी बात है। मेरे मुंह से अनायास ही निकल गया, 'बात तो अच्छी है पर इस स्पेशल कवर ने मेरी जान ही ले ली, जैसे शक्ति ही निचोड़ ली है।' सुनते ही प्रमुखाश्रीजी ने अमृतमयी मुस्कान सहित फरमाया, 'बिना जुनून के आकाश की ऊंचाईयां नहीं नापी जा सकती। हारना और थकना तुम्हारा काम नहीं। चलने वाला ही मंजिल पाता है।' प्रमुखाश्रीजी के इन शब्दों ने जैसे हार को जीत में बदल दिया। सब कुछ स्वतः स्फूर्त होता चला गया। ऐसी विशाल हृदयी महाश्रमणी को सौ–सौ वन्दन। उनके महाप्रस्थान पर असीमित श्रद्धांजलि।

वीणा बैद (पूर्व महामंत्री – अभातेममं)

शासन माता का जीवन गुण रत्नों का भंडार था। सन् 2014 में आचार्य श्री महाश्रमणजी के दिल्ली चातुर्मास में व्यवस्था समिति द्वारा तेरापंथ के इतिहास में प्रथम बार किसी महिला को आवास व्यवस्था आपूर्ति, हाउसकीपिंग व कुटीर निर्माण का कार्य सौंपा गया। मन में थोड़ी घबराहट भी थी कि इतने बड़े कार्य को कैसे सम्पादित करूंगी? चातुर्मास के दौरान आवास कार्यालय के भीतर से प्रमुखाश्रीजी का दिन में तीन बार आवागमन होता था। मुझे महसूस होता था कि उनके पदचरण स्पर्श से आवास कार्यालय में सदैव मुस्कुराहट एवं शांति का वातारवण स्थापित रहता। लाखों व्यक्तियों के आवागमन पर भी कभी किसी को स्थान की समस्या नहीं आई, यह उनके पदचरणों का ही चमत्कार था। आवास में भाई–बहनों की टीम के लिए शासन माता सदैव फरमाया कि टीम वर्क हो तो ऐसा हो। पूर्व में किसी आवास कार्यालय में इतनी शान्ति कभी नहीं देखी। विदाई के समय प्रवचन में आपने फरमाया कि मुझे ऐसी एक नहीं हिन्दुस्तान से 100 सुमन चाहिए। उनका आशीर्वाद, उनसे प्राप्त ऊर्जा जीवन को प्रकाशित करता रहे।

सुमन नाहटा (पूर्व महामंत्री – अभातेममं)

Shasan mata, Sadhvi Pramukha Kanak Prabha... A nun with incredible depth. A great leader, a great thinker and an intellectual. She was extremely well informed and well read, a saint who travelled the length and breadth of India. Her ability to communicate with everybody, irrespective of their background left an indelible mark on their lives including mine. Her humility, despite a vast following, her simplicity, her patience and above all her compassion made her a truly Extraordinary (Asaadhaaran)!! I was fortunate enough to converse with her and on several occasions her graceful kindness flowed to me. Specifically whenever I had seen her discussing poetry, there was a special twinkle and brightness in her eyes. Even with my limited knowledge of Hindi poem, I could see in her poems many layers of description of life's phenomena, as well as many layers of emotions and thoughts from simple to complex, from shallow to deep! She had a magnetic personality. Anybody in her presence was struck by the energy of her thinking and reasoning, her sense of detachment. Her mere presence left everyone awestruck and shaken....including me every time. I shall always remain indebted to her for her never ending blessings, guidance and spiritual support. I pay her my reverence and wish for her divine soul ..spiritual progress towards Moksh!

Taruna Bohra (Immediate Past Secretary - ABTMM)

भावभीनी अंतहीन अंजलि उस मां के प्रति जिसने मंजिल की ओर कदम रखना सिखाया। स्मृति पटल पर अनेक घटनाएं है। किस–किस अनुभूति का वर्णन करूं? जब राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी के दायित्व का निर्वहन कर रही थी तब बेंगलुरु कन्या अधिवेशन में आपने फरमाया, 'तुमन अच्छा श्रम किया है। इसी तरह आगे बढ़ती रहो।' मुझे लगा मानो मुझ पर अमृत की वर्षा हो गई हो। रायपुर में मैंने सूरत महिला मंडल की गति–प्रगति एवं कार्यों की प्रगति निवेदित की तब आपश्री ने फरमाया, 'सूरत महिला मंडल प्रगति क्यों नहीं करेगी, वहां पर तुम्हारे जैसी कार्यकर्त्ता जो है।' मैं आज भी उन शब्दों को याद करती हूं तो ऐसा लगता है कि मुझ जैसे छोटे से कार्यकर्त्ता को कितना बड़ा प्रोत्साहन दिया था। आपकी वाणी सदैव मेरे विकास का आलंबन बनती रहेगी। आपने श्राविका के रूप में भी मेरा निर्माण किया। एक बार सहज ही पूछा कि सामायिक 48 मिनट की ही क्यों होती है? मैंने अपनी समझ अनुसार उत्तर दिया किन्तु वह अधूरा था। तब आपने स्वयं ही उत्तर देकर मुझे कृतकृत्य कर दिया। आपने सदैव झोली भर भर करुणा बरसाई। श्रद्धासिक्त अभिवन्दना।

मधु देरासरिया (महामंत्री – अभातेममं)

वर्तमान में वर्द्धमान की आवश्यकता

धर्म किसी व्यक्ति को कुछ भी करने के लिए राजी कर सकता है। ईसा पूर्व छठी शताब्दी में कुछ प्रथाएं जैसे – पशु बलि, अंधविश्वास, शास्त्र अनुष्ठान आदि ने जाति के आधार पर समाज को विभाजित किया हुआ था। फलस्वरूप उस अवधि में 63 संप्रदायों का उदय हुआ। भगवान वर्द्धमान महावीर द्वारा प्ररूपित जैन धर्म उनमें से एक था।

भगवान महावीर द्वारा दिए गए सिद्धांत आज की आधुनिक दुनिया में भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने भगवान ने अपनी देशना में कहा।

अनेकांतवाद का सिद्धांत

अनेकांतवाद का सिद्धांत वास्तविकता की विविध प्रकृति से संबंधित है। इसके अनुसार सत्य के अनेक आयाम हैं। यदि कोई व्यक्ति किसी तथ्य को वास्तविक मानता है, तो केवल इसलिए कि वह वास्तविकता को अपने दृष्टिकोण से देखता है। वही तथ्य दूसरे व्यक्ति के लिए असत्य हो सकता है।

अनेकांतवाद को समझने के लिए पेड़ की चित्रकारी एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यदि आप कलाकारों को एक विशेष पेड़ का चित्र बनाने के लिए कहते हैं, तो प्रत्येक कलाकार इसे अपने दृष्टिकोण से चित्रित करेगा। एक ही पेड़ के कई चित्र हो सकते हैं लेकिन विभिन्न कोणों से। सभी चित्रों को आत्मसात करने का कार्य लगभग असंभव है। और अगर ऐसा होता भी है, तो एकीकृत पेंटिंग पेड़ की सटीकता की नकल नहीं कर सकती है। संक्षेप में, भगवान महावीर के अनुसार परम सत्य जैसी कोई चीज नहीं है और जैन धर्म अपने सिद्धांतों पर विचार करते हुए अन्य धर्मों का भी सम्मान करता है।

अनेकान्तवाद वर्तमान अनेक विपत्तियों का समाधान है। आज विभिन्न धर्मों के बीच विचारधाराओं में मतभेद समाज में मौजूद कई कुरीतियों का मूल कारण है। अनेकान्तवाद अन्य मान्यताओं के अस्तित्व पर विचार करने का सुझाव देता है और जनता को उनका सम्मान करने की सलाह भी देता है। इसके माध्यम से जातिवाद और उससे जुड़ी कई बुराइयों को दूर किया जा सकता है। विशेष रूप से भारत में धार्मिक सहिष्णुता की आवश्यकता है, जहां सैकड़ों धर्म और विचार सहअस्तित्व में हैं। अगर हर कोई इस अनेकांतवाद के सिद्धांत को समझे और उसका पालन करे तो धार्मिक दंगों को कम किया जा सकता है।

अहिंसा का सिद्धान्त

भगवान महावीर की शिक्षाओं का केंद्रीय आधार अहिंसा है। इसमें सभी प्रकार की हिंसा से बचना शामिल है। यह पांच महाव्रतों में से एक महाव्रत है, जिसका पालन प्रत्येक जैन से अपेक्षित है। भगवान महावीर ने लोगों को मौखिक, मनोवैज्ञानिक और शारीरिक रूप से अहिंसा का अभ्यास करने के लिए उत्प्रेरित किया। महावीर ने किसी भी जीवित प्राणी को नुकसान नहीं पहुंचाने की प्रेरणा दी। भले ही वह मांस, दवाएं या त्वचा प्राप्त करने के उद्देश्य से हो। जैन धर्म के अनुसार जानवरों के वध, पशु–आधारित खाद्य पदार्थ, शहद, शराब और आलू, गाजर, आदि जैसे जमीकन्द का सेवन वर्जित बताया गया है। भगवान महावीर द्वारा प्ररूपित अहिंसा की जैन अवधारणा अतिवादी और अव्यावहारिक लग सकती है, लेकिन इसके महत्त्व को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

आज हमें सदैव परमाणु युद्ध का भय रहता है। आवश्यक है कि ऐसी परिस्थितियों में अहिंसा के सिद्धांत को अपने जीवन में प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक प्रजाति के साथ समान व्यवहार सहित लागू करने का प्रयास करें।

अहिंसा किसी भी जीव की हत्या की भी निंदा करती है जिसमें एक से अधिक इंद्रियां हों। आज हम जानवरों पर क्रूरता और हत्या के बारे में देखते–सुनते हैं जो दुनिया के लगभग सभी प्रमुख धर्मों द्वारा प्रचारित करुणा या दया के सिद्धांत पर सवालिया निशान लगाते हैं।

अपरिग्रह का सिद्धान्त

भगवान महावीर ने अपरिग्रह के सिद्धान्त को सूक्ष्मता से व्याख्यायित किया। अपरिग्रह का मतलब है, चेतन और निर्जीव दोनों तरह की संपत्ति के लिए किसी भी तरह की मोह का पोषण नहीं करना। परिग्रह समस्त कामनाओं का मूल कारण है। जब व्यक्ति मोहवश कुछ प्राप्त करने में विफल रहता है, तो इसका परिणाम मानसिक तनाव हो जाता है। इंसान की चाहत कभी खत्म नहीं होती, जितना अधिक उसके पास होता है, उतना ही वह अधिक की कामना करता है।

आज हत्या, बलात्कार और कपटपूर्ण गतिविधियों जैसी भीषण घटनाओं से हम रोज जूझ रहे हैं। इन अपराधों का मुख्य कारण अधिक की चाहत है। ये गतिविधियाँ सामाजिक संतुलन को बाधित करती है।

भगवान महावीर के अपरिग्रह सिद्धांत के अनुसार, किसी की संपत्ति को चुराना या जो वस्तु अपनी नहीं, उसका मालिक बनना भी पाप है। भ्रष्ट आचरण की समस्या और उससे जुड़े नकारात्मक परिणाम इस दर्शन से संबोधित किए जा सकते हैं।

अपरिग्रह आंतरिक संपत्ति जैसे लालच, क्रोध, अहंकार, ईर्ष्या और घृणा को भी अस्वीकार करता है। इस तरह के विचारों को एक दूसरे के खिलाफ रखना कमजोर बुद्धि वाले व्यक्ति को गंभीर अपराध करने के लिए मजबूर कर सकता है। यह लोगों में भाईचारे की भावना को प्रभावित करता है।

आज की समस्याएं जैसे जातिवाद, भेदभाव, विचारधाराओं में अंतर के कारण हिंसा, क्रूर अपराध आदि इस दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने में बाधा बने हुए हैं। यह समझना इतना कठिन नहीं है कि भगवान महावीर के अनेकान्तवाद, अहिंसा और अपरिग्रह के सिद्धान्त विश्व में शांति और बंधुत्व का साम्राज्य फैला सकती है।

अनेकांतवाद, अहिंसा एवं अपरिग्रह – Perfect tools for peaceful life, Perfect devices for soul purification, Perfect instruments for healing life.

– नीलम सेठिया

जानो और समझो ध्यान के चार प्रकार
इस सम्यक् ज्ञान से जीवन लेगा आकार

.... The doctrine of thoughts & introspection ...

ध्यान क्या ?

मनुष्य प्रति पल किसी न किसी ध्यान की अवस्था में होता है। हमारा चित्त जब किसी एक दिशा में लगातार गतिमान रहे, उसे ध्यान कहा जाता है। पांचों इन्द्रियों को प्रिय लगने वाले विषय हमारे ध्यान को एकाग्र बना देते हैं। मन, वचन और काया की क्रियाओं के प्रति awareness ध्यान है। धर्म को समझने के लिए ध्यान के इन चार भेदों को practical तरीके से समझना होगा।

आर्तध्यान : Inferiority complex में जीना

जिन्दगी में जो नहीं हो पा रहा है या जो नहीं मिल पा रहा, उस पर ध्यान देना यानि अभाव पर ध्यान देना आर्तध्यान है। इस ध्यान में सदैव अभाव का एहसास/डर सताता है। जो व्यक्ति, वस्तु या शक्ति स्वयं के पास नहीं है, उसका ध्यान करना अथवा उसके बारे में सोचना आर्तध्यान है। इसमें मनुष्य Complaints एवं Comparison का जीवन जीता है, हर तरफ गलतियां या खामियां ही खोजता है।

Result : रोना, दुःखी होना, Low Esteem, Blood Pressure, Anxiety, Complaintful nature, Sleeplessness.

रौद्रध्यान : Superiority complex में जीना

दूसरों पर ध्यान देना और स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ समझने वाली भावना रखना रौद्रध्यान है। जो जैसा नहीं है, वैसा जताना या बनावटी जीवन जीने की कोशिश करना।

इसमें मनुष्य के पास 'मुझसे अधिक उसके पास कैसे ?' वाला attitude रहता है।

'कैसे छीनूं, कैसे बदला लूं ?' वाला भाव रहता है।

Bad Feelings, Bad Wishes की भावना पनपती रहती है।

Result : Ego, Ambitions, Jealousy, Anger, Hatred

आर्तध्यान एवं रौद्रध्यान की अवस्था से बचने का प्रयास करते हुए अपने जीवन को सार्थक बनाएं।

धर्मध्यान : The Right Way to Live Life

धर्मध्यान ही हमारे जीवन में ध्यान की महत्त्वपूर्ण अवस्था है। जिन्दगी को सही तरीके से जीना या किसी व्यक्ति या स्थिति के प्रति right thought process धर्मध्यान है। कषायों को मंद करते हुए आत्मा को शुद्धता की ओर ले जाने की अवस्था धर्मध्यान है।

सुख एवं दुःख को कर्मों का उदय मानते हुए समभाव में रहना, प्रशंसा और निन्दा में सम रहना, चिन्तन, भाव, विचार निर्मल एवं शुद्ध भाव में रहना धर्मध्यान है। Religion नहीं Spirituality हमें धर्मध्यान की अवस्था में रख सकती है। मैं कौन हूं, कैसा हूं और किस लिए मेरा जन्म हुआ है – यह चिन्तन धर्मध्यान की अवस्था है।

Result : Good Relationship; Peaceful, happy and well balanced life.

शुक्लध्यान : Neutral State of Mind

मन की अत्यन्त निर्मलता और शुद्धता होने पर जो समग्रता आती है, वही शुक्ल ध्यान है। इस ध्यान में विकार रहित भावधारा होती है। यह ध्यान की सर्वोत्कृष्ट अवस्था है। यहां जीव इन्द्रियातीत बन जाता है और स्वयं अपनी आत्मा का ध्यान करता है। यहां तक पहुंचने के लिए धर्मध्यान में जीने की कला में निपुण होना होगा।

Result : यथार्थ को यथार्थ समझना, Contented and blissful life. Stage of liberating the soul.

दृष्टान्त

सिनेमाघर में दरवाजे और लाइट बन्द करने के पश्चात् ही पर्दे पर चल रहे दृश्य स्पष्ट दिखाई देते हैं। उसी तरह इन्द्रियों के दरवाजों को बन्द करने से आत्मदर्शन स्पष्ट रूप से होने की संभावना बनती है। जरूरत है कि हम इन्द्रियों और कषायों पर विजय प्राप्त करते हुए धर्मध्यान की ओर अपना चित्त लगाएं।

Seven Types of Rest necessary for धर्मध्यान

Physical Rest : आराम करना, सोना, यत्नापूर्वक चलना, आदि

Mental Rest : योगासन, किताब पढ़ना, प्रकृति के साथ समय बिताना, मनपसन्द संगीत सुनना, आदि

Emotional Rest : स्वयं के साथ वक्त बिताना, Detach from worldly affairs, Resting your thoughts, आदि

Social Rest : सम–विचार वालों के साथ वक्त बिताना, आदि

Creative Rest : रचनात्मक कार्य जैसे पद्य रचना, कलाकृति, पाककला, बागवानी, इत्यादि

Sensory Rest : इलेक्ट्रानिक उपकरणों से दूर रहना, आदि

Spiritual Rest : कायोत्सर्ग, आत्मनिरीक्षण, आदि

इसी के साथ कल्पवृक्ष एक्सप्रेस स्टेशन 'शक्ति' से आगे बढ़ेगी और अगले माह अगले स्टेशन की ओर..शुभम् अस्तु!!!

कन्या मंडल

आहट... उजले कल की
संभावनाएं स्वर्णिम पल की

किं तत्त्वम्? तत्त्व क्या है? जिज्ञासा का यही मूल हैं। दर्शन के क्षेत्र में चिंतन–मनन का आरंभ तत्त्व से ही होता है। जैनदर्शन में लोक–व्यवस्था का मूल आधार 'तत्त्व' माना है। जैन दार्शनिकों ने तत्त्व का उपरोक्त अर्थ ही स्वीकार किया है और कहा है कि 'तत्त्व का लक्षण सत् है। यह सत् स्वयंसिद्ध है। सत् की न आदि है, न अन्त है। वह तीनों कालों में स्थित रहता है।'

जैनियों को आत्मा की शुद्ध एवं अशद्ध अवस्था के कारणों का परिज्ञान होना आवश्यक है। वे कारण, जो कि साधना के हेतु हैं, तत्त्व कहे जाते हैं। यही दृष्टि जैन तत्त्वज्ञान की आधारशिला है। जैन तत्त्वज्ञान जितना गंभीर है, उतना ही विज्ञान से भरपूर भी है। तीर्थंकरों द्वारा निरूपित तत्त्वज्ञान उनकी सर्वज्ञता का संवादी प्रमाण है। एक समय था जब जैन आगमों में निरूपित तथ्य विज्ञान के क्षेत्र में उपेक्षित रह जाते थे। वर्तमान में उन तथ्यों पर शोध होती है तथा एक–एक कर अनेक बातें वैज्ञानिकों द्वारा मान्य की जा रही है।

आज के परिप्रेक्ष्य में तत्त्वज्ञान यदि सीधे और सरल भाषा में प्रस्तुत किए जाएं तो भावी पीढ़ी को भी तत्त्वज्ञान में रुचि पैदा होगी और जैन सिद्धान्तों को समझने में आसानी होगी। इसी को ध्यान में रखते हुए अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल ने तत्त्वज्ञान के विभिन्न बोलों अथवा थोकड़ों पर आधारित अंग्रेजी में सरल तरीके से वीडियो बना कर प्रसारित करने का लक्ष्य बनाया है। इस माह कन्या मंडल की कन्याओं हेतु तत्त्वज्ञान पर आधारित वीडियो बनाने का कार्य दिया जा रहा है, जिसका सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है :–

करणीय कार्य
तत्त्वज्ञान पर आधारित Pictorial Videos

नियम

- यह प्रतियोगिता केवल तेरापंथ कन्याओं हेतु ही आयोज्य है।
- जिस बोल या थोकड़े पर वीडियो बनाना चाहते हैं, उसे संयोजिका श्रीमती रमण पटावरी मो. 99035 18222 के पास 10 अप्रैल 2022 तक register करवा लें।
- आप द्वारा desired बोल किसी अन्य ने पहले ही register करवा लिया हो तो आपको किसी अन्य बोल/थोकड़े पर register कराना होगा।
- English script 20 अप्रैल 2022 तक संयोजिका श्रीमती रमण पटावरी मो. 99035 18222 को भिजवाएं। स्क्रिप्ट को green signal मिलने के पश्चात् ही वीडियो बनाना प्रारम्भ करें।
- Rendered Video सहमंत्री श्रीमती निधि सेखानी मो. 98796 33133 के पास भेजने की last date 15 मई 2022 होगी।
- Video का duration ज्यादा लम्बा न हो। Video landscape format में ही हो, portrait mode में कतई न हो।
- Video का content crisp, short and to-the-point हो।
- Video पूरी तरह pictorial हो। सम्पूर्ण बोल/थोकड़े को pictures के माध्यम से समझाने का प्रयास होना चाहिए।
- Video के start में Intro slide लगानी compulsory है। Intro slide ABTMM website पर CDR, PDF & JPG format में उपलब्ध है।
- पूरे Video में MM का logo Top Right Corner में लगा होना चाहिए। (MM logo in PNG format available on website)
- भेजे गए Video पर अभातेमम के rights होंगे। इन Videos को ABTMM Youtube Channel पर publish किया जाएगा।
- Panelists द्वारा selected Top 10 Videos को पुरस्कृत किया जाएगा।

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें संयोजिका श्रीमती रमण पटावरी मो. 99035 18222

पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में कन्या मंडल राष्ट्रीय अधिवेशन 6–7–8 अगस्त 2022 को छापर (राज.) में आयोज्य है।
सम्पूर्ण विवरण समय रहते आपको प्रेषित कर दिया जाएगा। परिस्थितिनुसार परिवर्तन संभव है।

परिहार पाप का : निखार आत्मा का
A BOOT CAMP TO DISCOVER A NEW ME

18 पापों को गहराई से समझने तथा दैनिक जीवनचर्या में इन पापों से बचने के प्रयास हेतु 18 पापों पर आधारित एक प्रयोगशाला अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में 5 फरवरी से 12 मार्च 2022 तक 36 दिनों तक अनवरत चली।

36 दिवसीय इस प्रायोगिक जीवनचर्या में 18 पापों से सही मायने में दूर रहकर जीवन को अधिक आनन्दमय बनाने हेतु आयोजित इस प्रयोगशाला में लगभग 3000 से भी अधिक व्यक्तियों ने जुड़कर धन्यता का अनुभव किया। इस प्रयोगशाला में

- संभागियों के 12 व्हाट्सएप्प ग्रुप बनाए गए एवं प्रत्येक ग्रुप में दो तत्त्वज्ञ mentor थे जिन्होंने प्रतिदिन संभागियों को guide किया।
- ग्रुप में प्रत्येक पाप पर विश्लेषण देते हुए हर पाप से दो दिन तक बचने हेतु प्रेरित किया गया।
- प्रतिदिन श्रीमती संस्कृति भण्डारी द्वारा प्रायोगिक प्रशिक्षण का उपक्रम चलता एवं हर पाप पर आधारित पर कथानक का वीडियो भी प्रेषित किया गया।
- रात्रि में षटकाय आभार प्रार्थना का क्रम चलता।
- सायंकालीन निर्धारित समय पर ग्रुप खोले जाते और संभागियों के उस दिन के अनुभव और जिज्ञासाएं Mentors द्वारा समाहित की जाती।

इस कार्यशाला में संयोजिकाद्वय श्रीमती शिल्पा बैद एवं श्रीमती संतोष वेदमुथा का श्रम मुखरित हो रहा था। संभागियों को प्रतिदिन दिशाबोध हेतु Mentors श्रीमती संस्कृति भण्डारी, श्रीमती प्रतिभा दूगड़, सुश्री रंजना गोठी, श्रीमती वीणा बोथरा, श्रीमती चांद छाजेड़ एवं श्रीमती रंजना मरोठी का भी महनीय श्रम लगा।

सामर्थ्य
महिलाएं और वित्तीय साक्षरता
Financial literacy for Women

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती नीलम जी सेठिया की नवीन सोच से 50,000 तेरापंथी बहनों को आर्थिक सुदृढ़ता एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए 6 दिवसीय फाइनेंसियल लिटरेसी कोर्स का शुभारम्भ 10 फरवरी 2022 से प्रारम्भ हुआ।

इस प्रशिक्षण कोर्स में *LXME* की संस्थापक श्रीमती प्रीति राठी गुप्ता एवं उनके सहयोगियों द्वारा छः साप्ताहिक कक्षाएं Zoom पर ली गई, जो कि अधोलिखित विषयों पर आधारित थी :–

- Session 1 : 10th Feb 2022 -Bank Account, Net Banking, Digital Wallet and more.
- Session 2 : 17th Feb 2022 - Boot Camp - Money Lessons for Women.
- Session 3 : 24th Feb 2022 - Stocks, Mutual Funds, Real Estate and more.
- Session 4 : 3rd March 2022 - Gold and Fixed Income.
- Session 5 : 10th March 2022 - A five must haves.
- Session 6 : 28th March 2022 - Investment Journey - Pass on your wealth the right way.

अध्यक्ष श्रीमती नीलम जी सेठिया ने कहा कि अभातेममं का प्रयास है कि हर महिला का विकास हो खास! सामर्थ्य के अंतर्गत महिला वित्तीय साक्षरता के बारे में काफी कुछ बताया गया है और सभी की प्रतिक्रियाएं जानकर प्रसन्नता भी हुई है।

सामर्थ्य की संयोजिका श्रीमती ज्योति जैन एवं सह–संजोयिका श्रीमती सोनम बागरेचा के अथक श्रम ने इस कार्यक्रम को सफल बनाया। इस कोर्स से 1000 बहनें जुड़ी एवं प्रत्येक साप्ताहिकी प्रशिक्षण को काफी सराहा गया।

जैन स्कॉलर के चतुर्थ बैच का भव्य शुभारम्भ

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत दि. 25 मार्च 2022 को जैन स्कॉलर के चतुर्थ बैच का भव्य शुभारंभ लाडनूं के जैन विश्व भारती परिसर स्थित अभातेममं मुख्य कार्यालय 'रोहिणी' में हुआ।

आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्याएं साध्वीश्री विमलप्रज्ञाजी, साध्वीश्री श्रुतयशाजी एवं साध्वीश्री सम्यक्त्वयशाजी की पावन सन्निधि एवं महामंत्रोच्चार सहित बैच प्रारंभ हुआ। साध्वीश्री विमलप्रज्ञाजी ने महिला मंडल द्वारा जैनिज्म के प्रचार प्रसार में इस प्रकार के पाठ्यक्रम को महनीय बताते हुए जैन धर्म के व्यापक सिद्धान्तों को समझते हुए आत्मसात् करने की प्रेरणा दी।

अभातेममं अध्यक्ष श्रीमती नीलम सेठिया ने उपस्थित विद्यार्थियों को संपोषण देते हुए आज की परिस्थिति में जैन धर्म के सिद्धान्तों की प्रासंगिकता बताते हुए श्रावक/श्राविकाओं को ऐसे पाठ्यक्रम से जुड़ कर स्वयं जैनिज्म को समझते हुए औरों को भी प्रेरित करने का आह्वान किया। जैन स्कॉलर निदेशिका श्रीमती मंजु नाहटा एवं सह–निदेशिका श्रीमती कनक बरमेचा ने इस कोर्स की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए अध्ययन से जुड़ी विस्तृत जानकारी प्रदान की। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने बैच पहना कर सभी प्रशिक्षक एवं ज्ञानार्थियों का स्वागत किया। श्रीमती राजू दूगड़, श्री विकास गर्ग एवं श्रीमती सुषमा आंचलिया द्वारा सघन प्रशिक्षण दिया।

मुख्य अतिथि चुरू जिला प्रमुख श्रीमती वन्दना आर्य ने जैन धर्म के मूलभूत सिद्धांतों की महत्त्वता को दर्शाते हुए महिला मंडल द्वारा ऐसे कोर्स हेतु साधुवाद प्रेषित किया। ज्ञातव्य है कि इस बैच में जैन धर्म के सिद्धान्तों का गहन अध्ययन हेतु देश भर के सुदूर प्रदेशों से 27 विद्यार्थी एकत्रित हुए। साथ ही कई मुमुक्षु बहनें भी ज्ञानार्जन कर रही है।

इस परियोजना का सौजन्यकर्त्ता श्रीमान् मदनजी–प्रकाशदेवी, श्रीमान् महेन्द्रजी–कान्तादेवी तातेड़ – धानीन, मुम्बई है।

'भावना सेवा' में सेवार्थी

20 फरवरी से 25 फरवरी – नोएडा
श्रीमती सुमन सिपानी, श्रीमती पुष्पा छाजेड़,
श्रीमती दीपिका चौरड़िया, श्रीमती निर्मला डागा, श्रीमती कविता लोढ़ा

26 फरवरी से 4 मार्च – दिल्ली
श्रीमती निर्मला बोथरा, श्रीमती साया सुराणा,
श्रीमती सरोज बेगवानी, श्रीमती पुष्पा बोथरा, श्रीमती प्रेम सेठिया

5 मार्च से 11 मार्च – ठाणे सिटी
श्रीमती अनिता धारीवाल, श्रीमती जयंती भंसाली,
श्रीमती पुष्पा श्रीश्रीमाल, श्रीमती सुशीला भटेवड़ा,
श्रीमती सीमा सांखला, श्रीमती कान्ता राठौड़

8 मार्च से 14 मार्च – लाडनूं
माणक बाई कोठारी, कमला बाई कठोतिया, संतोष बाई बैद

12 मार्च से 18 मार्च – सेमड़
श्रीमती मंजु तलेसरा, श्रीमती कंकु तलेसरा, श्रीमती मीना तलेसरा,
श्रीमती भावना पुनमिया, श्रीमती बसन्ती सिसोदिया

14 मार्च से 21 मार्च – लाडनूं
माणक बाई कोठारी, कमला बाई कठोतिया, संतोष बाई बैद

19 मार्च से 25 मार्च – चेन्नै
श्रीमती पुष्पा हिरण, श्रीमती किरण हिरण, श्रीमती सरला मूथा,
श्रीमती मंजु आच्छा, श्रीमती सुमित्रा पुनमिया, श्रीमती पुष्पा बाई

26 मार्च से 1 अप्रैल – राजराजेश्वरी नगर, बेंगलुरु
श्रीमती सीमा छाजेड़, श्रीमती पूनम दूगड़, श्रीमती सरोज चौरड़िया,
श्रीमती सुमन जैन

अभातेममं सदस्यों द्वारा प्रदत्त सेवा

श्रीमती नीलम सेठिया, श्रीमती सूरज बरड़िया, श्रीमती कुमुद कच्छारा, श्रीमती मधु देरासरिया, श्रीमती अर्चना भण्डारी, श्रीमती सीमा बैद

सभी सेवार्थी मंडल एवं बहनों को हार्दिक साधुवाद। संयोजकद्वय श्रीमती सरिता डागा एवं श्रीमती निधि सेखानी के श्रम को साधुवाद।

REVIVAL घो.वि. पू.लि.
पुरानी ढालों का पुनरावर्तन

इस माह हम पुनरावर्तन करेंगे

दस दान

(आत्मबोध गीत)

इस माह की ढाल को अपने क्षेत्र में कार्यशाला, प्रतियोगिता या किसी भी अन्य विधा से बहनों को राग सहित कण्ठस्थ करवानी है। इस माह के गीत का link :

https://fb.watch/c6p94TC-fH/
(Touch the above link to open FB video)

गीतिका का विवेचन PDF द्वारा संप्रेषण किया जाएगा।
अधिक जानकारी हेतु
महामंत्री श्रीमती मधु देरासरिया मो. 9427133069 से संपर्क करें।

सफ़र

संकल्प से सफलता तक

(राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा संपादित कार्यशाला)

गंगाशहर

दि. 22 मार्च 2022 को अभातेममं के तत्त्वावधान में साध्वीश्री कीर्तिलताजी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल गंगाशहर द्वारा 'सफ़र संकल्प से सफलता तक' बीकानेर-गंगानगर प्रांतीय कार्यशाला का आयोजन हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती नीलम सेठिया की अध्यक्षता एवं उपाध्यक्ष श्रीमती विजयलक्ष्मी भूरा, पूर्व महामंत्री श्रीमती सुमन नाहटा, रा.का.स. श्रीमती नीतू पटावरी, मारवाड़ अंचल प्रभारी श्रीमती सारिका बागरेचा, श्रीमती विनीता बेंगानी की गरिमामय उपस्थिति में रही।

स्थानीय अध्यक्ष श्रीमती ममता रांका ने राष्ट्रीय सदस्यगण एवं प्रांतीय शाखाओं का स्वागत किया। स्थानीय तेममं द्वारा स्वागत गीत का संगान किया गया। साध्वीश्री कीर्तिलताजी द्वारा नमस्कार महामंत्र एवं लोगस्स पाठ का उच्चारण किया गया। सभा उपाध्यक्ष श्री प्रकाश भंसाली, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान अध्यक्ष श्री महावीर रांका, मंत्री श्री हंसराज डागा, तेयुप से श्री देवेन्द्र डागा, अणुव्रत समिति से श्री मनीष बाफना ने शुभकामनाएं प्रेषित की।

रा.का.स. श्रीमती नीतू पटावरी ने अपने वक्तव्य में आचार्यप्रवर एवं चारित्रात्माओं के गुणों के कुछ अंश को आत्मसात् करते हुए जीवन को सफल बनाने हेत आह्वान किया। उपाध्यक्ष श्रीमती विजयलक्ष्मी भूरा ने कहा कि नारी शक्ति स्वयं की ताकत बनें और अपने इरादे मजबूत रखें।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती नीलम सेठिया ने आत्मदीपोभवः का विश्लेषण करते हुए बताया कि प्रगति का दरिया बहता रहे, परिश्रम अनवरत चलता रहे। प्रमुखाश्रीजी की रिक्तता को आपूरित करना कठिन है पर छोटे-छोटे संकल्पों से ही शासन माता को सच्ची श्रद्धांजलि दी जा सकती है।

साध्वीश्री कीर्तिलताजी ने अपने मंगल उद्‌बोधन में फरमाया ाकि संकल्प की डोर से सफलता तक पहुंचे, समर्पण सफलता का द्योतक है। परामर्शक श्रीमती शारदा डागा द्वारा संचालित मंच से अनुगूंज पुस्तक का लोकार्पण राष्ट्रीय टीम द्वारा किया गया। पूर्व महामंत्री श्रीमती सुमन नाहटा ने तलाक बढ़ने के कारण व निवारण बतलाए। इस कार्यशाला में भीनासर, बीकानेर, देशनोक, जोरावरपुरा, कालू, लूणकरणसर, मोमासर, नाल, नोखा, उदासर, श्री डूंगरगढ, रायसिंहनगर, सूरतगढ़, पीलीबंगा आदि 17 क्षेत्रों से लगभग 300 बहनों ने भाग लिया। संचालन श्रीमती सुप्रिया राखेचा एवं श्रीमती संजू लालाणी ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री कविता चोपड़ा द्वारा किया गया।राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती नीलम सेठिया ने तेममं गंगाशहर को एप्रिशिएसन सर्टिफिकेट एवं समस्त शाखाओं को उपस्थिति सर्टिफिकेट प्रदान किया।

राष्ट्रीय कार्यसमिति टीम ने समस्त वयोवृद्ध चारित्रात्माओं के दर्शन किए।

परचम केसरिया शक्ति का

(राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा संपादित कार्यशाला)

लूणकरणसर

दि. 23 मार्च 2022 को अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं लूणकरणसर द्वारा शासनश्री साध्वी पानकुमारीजी 'द्वितीय' के पावन सान्निध्य में 'परचम केसरिया शक्ति का' कार्यशाला आयोजित की गई। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती नीलम सेठिया की अध्यक्षता में मारवाड़ अंचल प्रभारी श्रीमती सारिका बागरेचा एवं रा.का.स. श्रीमती विनीता बेंगानी एवं श्रीमती नीतू बैद की गरिमामय उपस्थिति रही।

कन्या मंडल एवं महिला मंडल की बहनों ने स्वागत गीत की प्रस्तुति दी। प्रेरणा गीत संगान के पश्चात् स्थानीय अध्यक्ष श्रीमती चन्दा भूरा ने सभी का स्वागत किया। रा.का.स. श्रीमती नीतू बैद एवं सभा मंत्री श्री प्रेम बैद ने वक्तव्य प्रस्तुत किया।

साध्वीश्री मंगलयशाजी ने फरमाया कि वीरता का प्रतीक केसरिया रंग है और गुरु दृष्टि से जो आराधना होती है, वहां कुछ न कुछ अवश्य प्राप्त होता है। अभातेममं राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती नीलम सेठिया ने साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी को भावभीनी श्रद्धांजलि देने के पश्चात् संगठित केसरिया शक्ति की महिमा के बारे में बताया।

आभार ज्ञापन स्थानीय मंत्री श्रीमती शांति बोथरा ने किया। संचालन श्रीमती मोनिका नवलखा ने किया। अभातेममं की ओर से लूणकरणसर मंडल को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

श्रीडूंगरगढ़

दि. 23 मार्च 2022 को अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं श्रीडूंगरगढ़ द्वारा साध्वी श्री पावनप्रभाजी एवं सेवा केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वीश्री चरितार्थप्रभाजी की पावन सन्निधि में 'परचम केसरिया शक्ति का' कार्यशाला आयोजित की गई। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती नीलम सेठिया की अध्यक्षता में संरक्षिका श्रीमती शांता पुगलिया, रा.का.स. श्रीमती विनीता बेंगानी एवं श्रीमती सारिका बागरेचा की गरिमामय उपस्थिति रही।

स्थानीय अध्यक्ष श्रीमती मंजू बोथरा ने सभी का स्वागत किया। साध्वीश्री पावनप्रभाजी ने केसरिया शक्ति की प्रतीक नारी जाति को परचम फहराते हुए आध्यात्मिक विकास के साथ सेवा के क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। साध्वीश्री चरितार्थप्रभाजी ने नारी जाति को सोशल मीडिया से उबर कर नई ऊर्जा व चेतना के साथ आरोहण के शिखर पर चढ़ने का आह्वान किया। संरक्षिका श्रीमती शांता पुगलिया ने समस्त नारी जाति को शिक्षा, समर्पण, स्वाभिमान व स्वावलंबन के पथ पर चलते हुए उच्चतम पायदानों को स्पर्श करने हेतु प्रेरित किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती नीलम सेठिया ने साध्वीप्रमुखाश्रीजी का स्मरण करते हुए कार्यशाला के उद्देश्यों व आवश्यकताओं पर विस्तृत प्रकाश डाला। महिलाओं को समयानुसार चलते हुए अपने व्यक्तित्व व कर्तृत्व द्वारा नई ऋचाएं लिखने की प्रेरणा दी।

प्रारम्भ में हेमलता बरड़िया ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। स्थानीय संरक्षिका श्रीमती श्रीमती झणकार बोथरा, तुलसी सेवा संस्थान अध्यक्ष श्री भीखमचंद पुगलिया, सभा कोषाध्यक्ष श्री कमल बोथरा, तेयुप मंत्री श्री प्रदीप पुगलिया, अणुव्रत समिति मंत्री श्री के.एल. जैन, कन्या मंडल संयोजिका श्रीमती महिमा दूगड़ व वार्ड पार्षद श्रीमती अंजू पारख ने वक्तव्य दिया। आभार ज्ञापन मंत्री श्रीमती मंजू झाबक ने किया। संचालन उपाध्यक्ष श्रीमती मधु झाबक ने किया। अभातेममं की ओर से लूणकरणसर मंडल को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

नोखा

दि. 24 मार्च 2022 को अभातेममं के तत्त्वावधान में नोखा तेममं ने 'परचम केसरिया शक्ति का' कार्यशाला का आयोजन शासन गौरव साध्वीश्री राजीमतीजी के पावन सान्निध्य में किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती नीलम सेठिया की अध्यक्षता एवं मारवाड़ अंचल प्रभारी श्रीमती सारिका बागरेचा एवं रा.का.स. श्रीमती विनीता बेंगानी की गरिमामयी उपस्थिति रही। शासन गौरव साध्वी श्री राजीमतीजी ने उद्बोधन में फरमाया कि नारी एक अखण्ड व्यक्तित्व का नाम है जो उसको पहचान लेती है उनको इतिहास याद करता है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती नीलम सेठिया ने साध्वीप्रमुखाश्रीजी का स्मरण करते हुए कार्यशाला के उद्देश्यों व आवश्यकताओं पर विस्तृत प्रकाश डाला। परिवार के पुरुषों के साथ व्यापारिक व वित्तीय जानकारियां साझा करने की जरूरतों से परिचित कराया।

कन्या मंडल ने महासती सरदारांजी पर नाटिका प्रस्तुत की। स्थानीय अध्यक्ष श्रीमती मंजू बैद ने स्वागत भाषण दिया। कमं संयोजिका श्रीमती पूजा लोढ़ा, तेयुप से श्री गोपाल लूणावत, सभा मंत्री श्री इन्द्रचंद बैद, श्रीमती सरोज मरोठी, जोरावरपुरा तेममं से श्रीमती शकुंतला मरोठी ने वक्तव्य दिया। संचालन श्रीमती जयश्री भूरा ने किया। मंत्री श्रीमती प्रीती मरोठी ने आभार ज्ञापित किया। तत्पश्चात् राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अपनी टीम सहित नोखा एवं निकटवर्ती क्षेत्रो में मुनिश्री अमृतकुमारजी, मुनिश्री मोहजीतकुमारजी एवं साध्वीश्री ललितकलाजी के दर्शन किए।

कालू

दि. 23 मार्च 2022 को कालू में साध्वीश्री उज्ज्वलरेखाजी के सान्निध्य में अभातेममं की अध्यक्ष श्रीमती नीलम सेठिया, मारवाड़ अंचल प्रभारी श्रीमती सारिका बागरेचा एवं रा.का.स. श्रीमती विनीता बेंगानी ने तेरापंथ भवन में पदार्पण किया। साध्वीश्रीजी का मंगल उद्बोधन एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष का वक्तव्य हुआ। इससे पूर्व कन्या मंडल ने मंगलाचरण एवं स्थानीय अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा सांड ने स्वागत भाषण दिया। मंत्री श्रीमती रेणु बोथरा ने आभार ज्ञापित किया। संचालन सहमंत्री श्रीमती कल्पना सांड ने किया। कार्यक्रम से पूर्व राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य ने वयोवृद्ध साध्वीश्री बिदामांजी के भी दर्शन किए।

संस्था का प्रयास
फैले 7500 दिव्यांग बच्चों के जीवन में ज्ञान का प्रकाश

आजादी के 75वें वर्ष पर आयोजित प्रोजेक्ट 'स्नेहम्' से देश के दिव्यांग बच्चों को शिक्षा की रोशनी देने का सार्थक प्रयास कर रहे हैं हमारे शाखा मंडल। मार्च माह में शाखा मंडल द्वारा अंध-मूक-बधिर बच्चों हेतु प्रदत्त पाठ्य सामग्री की सूची :-

शाखा	स्कूल/आश्रम का नाम	सामग्री वितरित	गणमान्य उपस्थिति
साउथ कोलकाता	Arogya Sandhan Residential Care Home for Differently Abled People	Multimedia Projector & Screen	प्रशासनिक अधिकारी श्री जयदेव पाल सचिव श्री निरंजन बिश्वास सहसचिव श्री बी.एन. नास्कर कोषाध्यक्ष श्री सुरजीत दास
नीमच	भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी	Music Player, Mike	खुमार कुंवर भारद्वाज जी अधिशिक्षिका रचना जी
चेन्नै	नेत्रोदय स्कूल ऑफ एज्युकेशन	2 JAWS Software 1 Laser Printer	मानवाधिकार इंस्पेक्टर श्रीमती कंचना समूगा सीर तीरुथम संपादक श्री डिल्ली बाबू शिवसेना तमिलनाडु सचिव श्री गोविंदराजुलु
साउथ हावड़ा	बादामी देवी शिक्षा कल्याण केन्द्र Dumb & Deaf School	2 CCTV Cameras Speech Training Electronic Machine	राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती नीलम सेठिया संरक्षिका श्रीमती तारा सुराणा, ट्रस्टी श्रीमती सूरज बरड़िया परामर्शक श्रीमती लता गोयल बंगाल प्रभारी श्रीमती रमण पटावरी व श्रीमती सोनम बागरेचा रा.का.स. श्रीमती बबीता भूतोड़िया, एसोसिएट मेम्बर श्रीमती संगीता बाफना
मुम्बई	कमलिनी कर्ण बधिर विद्यालय, कोपरी	4 Tabs	
मुम्बई	श्री नाकोड़ा भैरव कर्ण बधिर विद्यालय, भिवंडी	Television	
मुम्बई	स्वयंसिद्धा को-ओ. सोसाइटी फॉर हेंडीकेप, नेरुल	Computer	

आध्यात्मिक प्रवृत्तियां

शृंखलाबद्ध नीवी

मार्च माह में

01 मार्च - नवसारी - 18
02 मार्च - जसोल - 227
03 मार्च - पचपदरा - 60
04 मार्च - राजमहेन्द्रवरम - 16
05 मार्च - सचिन - 04
06 मार्च - मानसा - 02
07 मार्च - कृष्णाई - 03
08 मार्च - राश्मि - 11
09 मार्च - ईरोड़ - 07
10 मार्च - विजयनगरम् - 25
11 मार्च - मदुरै - 04
12 मार्च - कोकराझाड़ - 30
13 मार्च - तेजपुर - 09
14 मार्च - दोन्दाईचा - 15
15 मार्च - बेलडांगा - 05
16 मार्च - धोईन्दा - 15
17 मार्च - निरमली - 06
18 मार्च - अररिया आर.एस.- 01
19 मार्च - सोलापुर - 04
20 मार्च - छोटी खाटू - 06
21 मार्च - आसीन्द - 145
22 मार्च - अररिया कोर्ट - 01
23 मार्च - तिरुप्पुर - 23
24 मार्च - दुर्ग - 07
25 मार्च - चलथान - 17
26 मार्च - भागलपुर - 02
27 मार्च - बीकानेर - 51
28 मार्च - नंजनगुड़ - 05
29 मार्च - हन्सुर - 08
30 मार्च - सिंधनूर - 05
31 मार्च - लिलुआ - 10

जिन शाखाओं ने अभी तक सहभागिता दर्ज नहीं करवाई है,
वे अवश्य अपना नाम संयोजिका श्रीमती अदिति सेखानी मो. 99090 24763 के पास आरक्षित करवाएं।
नीवी में तिथि आरक्षित करने हेतु Google Form Link : https://forms.gle/i9i2hmwWTQEHa4oVA (Touch to open link)

ज्ञान चेतना प्रश्नोत्तरी?

अप्रैल 2022

सन्दर्भ पुस्तक : धर्म है उत्कृष्ट मंगल (पृष्ठ संख्या 23 से 43)

एक शब्द में उत्तर दें

1. निर्जरा के दो भेद हैं – सकाम और दूसरा ?
2. सम्यग् दृष्टि से असंख्य गुण अधिक निर्जरा इसे कहते हैं ?
3. चारित्र मोहनीय के मुख्य भेद दो हैं – कषाय और दूसरा ?
4. जब तक मिश्र वेदनीय का उदय रहता है तब तक जीव को कौन सा सम्यक्त्व प्राप्त नहीं हो सकता ?
5. उपवास से लेकर छह मास तक की तपस्या कौन सा अनशन है ?
6. यावत् कथिक अनशन के कितने प्रकार है ?
7. निर्जरा के बारह भेदों में दूसरा भेद कौन सा है ?
8. छलना का परिहार करना, सरलता का विकास करना क्या है ?
9. अभिग्रह के कितने प्रकार है ?
10. अमुक समय में भिक्षा मिलेगी तो उसे स्वीकार करूंगा अन्यथा नहीं, यह कौन सा अभिग्रह है ?

रिक्त स्थान की पूर्ति करें

11. वेदना को सहने से भी .... होती है।
12. कुशलमूला निर्जरा भी दो प्रकार की होती है – शुभानुबन्धा और ....
13. .... पुरुषार्थ हो तो गन्तव्य निकट होता चला जाता है।
14. सम्यक्त्व के लिए .... चारित्र का होना भी अनिवार्य है।
15. आगमों के एक वर्गीकरण का नाम .... है।
16. प्रायोपगमन अनशन – यह .... अनशन है।
17. अवमोदरिका का तात्पर्य है .... अथवा संयम।
18. साधु जीवन .... और अनिश्चितता का जीवन है।
19. महामना आचार्य भिक्षु .... संकल्प चेतना के धनी थे।
20. .... उच्छृंखल और अनियंत्रित मन के निग्रह का प्रयोग है।

प्रविष्टि भेजने की अन्तिम तिथि : 20 अप्रैल 2022

Google Form Link : https://forms.gle/ciSk5RUT5Jjms5v57

Touch to open link of Google Form

मार्च 2022 प्रश्नोत्तरी के सही उत्तर

1. सात	2. पांच	3. चार	4. अधर्मास्तिकाय	5. घाती
6. छह	7. ऐर्यापथिक	8. आश्रव	9. वैभाविक	10. संवर
11. मोक्ष	12. पांच	13. सहभावी	14. काल	15. शुभकर्म
16. नियंता	17. कर्म	18. तेरह द्वार	19. व्रत संवर	20. सावद्य

मार्च 2022 प्रश्नोत्तरी के भाग्यशाली विजेता

1. श्रीमती इन्दु दूगड़, पिंपरी चिंचवड़
2. श्रीमती खुशबू कंठालिया, उदयपुर
3. श्रीमती मीना बड़ाला, विरार मुंबई
4. श्रीमती चन्द्रकांता दूगड़, ब्यावर
5. श्रीमती मैना सुराणा, पूर्वांचल कोलकाता
6. श्रीमती पुष्पा बरड़िया, हैदराबाद
7. श्रीमती सरोज सेठिया, कालू
8. श्रीमती प्रियंका सिंघी, राजमहेन्द्रवरम
9. श्रीमती सुधा सोनी, कांकरोली
10. श्रीमती विमला डागलिया, ठाणे वेस्ट

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल को प्रदत्त अनुदान

समस्त अनुदानदाताओं का हार्दिक आभार

₹3,50,000
श्रीमती सुशीला पटावरी
श्रीमती सोनाली पटावरी
श्रीमती नीतू पटावरी
श्रीमती नम्रता पटावरी
(मोमासर – दिल्ली)

₹2,00,000
शासन सेवी श्री पन्नालालजी बैद
चीफ ट्रस्टी श्रीमती सौभाग बैद
श्री महेन्द्र श्रीमती अल्पना बैद
(राजलदेसर–जयपुर)

₹1,11,111
श्रीमती चन्द्रकला महनोत
श्री धर्मेन्द्र श्रीमती बिन्दु
श्री जयन्त श्रीमती खुशी महनोत
(डीडवाना–झरसुगुड़ा)
सवाई सिंह चन्द्रकला
महनोत चेरिटेबल ट्रस्ट

₹51,000
श्रीमती मंजू श्री प्रकाश बैद
(लाडनूं–कोलकाता)
की 50वीं वैवाहिक
वर्षगांठ के
उपलक्ष्य में

₹50,000
श्रीमती शान्तिदेवी
श्रीमती सुमनदेवी सिपानी
(नोएडा)

₹50,000
गिडिया
(बीदासर–बेंगलुरु–चेन्नै)

₹50,000
तेरापंथ महिला मंडल
गंगाशहर

₹11,000	श्रीमती निर्मला जैन, नोएडा	₹10,000	तेरापंथ महिला मंडल, लूणकरणसर
₹5,100	सुश्री वीणा जैन (लाडनूं–जैविभा)	₹5,000	श्रीमती कंचन देवी सेठिया, नोएडा

अभातेममं पदाधिकारियों की नोएडा के साथ बैठक

दि. 11 मार्च 2022 को महरौली में Meet and Greet में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती नीलम सेठिया, महामंत्री श्रीमती मधु देरासरिया एवं कन्या मंडल प्रभारी श्रीमती अर्चना भण्डारी ने नोएडा महिला मंडल के सदस्यों के साथ बैठक की। श्रीमती अर्चना भण्डारी ने उपस्थित बहनों का परिचय दिया। श्रीमती कविता लोढ़ा ने मंडल की गतिविधियों की जानकारी प्रदान की। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती नीलम सेठिया ने प्रेरणादायी शब्दों में बहनों में नई ऊर्जा का संचार किया। महामंत्री श्रीमती मधु देरासरिया ने भावना सेवा हेतु नोएडा मंडल सहित अन्य अनुदानदाताओं का आभार व्यक्त किया। नोएडा मंत्री श्रीमती दीपिका चौरड़िया ने आभार ज्ञापित किया।

महावीर जयन्ती पर विशेष क्विज़

महावीर जयन्ती के उपलक्ष्य में भगवान महावीर पर आधारित एक विशेष क्विज़ का आयोजन Wisdom Wednesday के तहत दि. 14 अप्रैल 2022 को Facebook पर मध्यान्ह 2 बजे से आयोजित होगा। सभी महिलाओं/कन्याओं से अधिकाधिक संख्या में भाग लेने हेतु विनम्र निवेदन।

तत्त्वज्ञान/तेरापंथदर्शन/तत्त्वविज्ञ पाठ्यक्रम

तत्त्वविज्ञ के फॉर्म 15 अप्रैल 2022 तक भर सकते हैं। फॉर्म अपने क्षेत्र की व्यवस्थापिका द्वारा ही भेजा जाए, व्यक्तिगत रूप से प्रेषित फॉर्म मान्य नहीं किए जाएंगे। तत्त्वज्ञान व तेरापंथदर्शन का रिजल्ट शीघ्र आने वाला है।

पंजीकृत कार्यालय : 'रोहिणी', अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल, लाडनूं (राज.) 341306

महामंत्री कार्यालय
मधु देरासरिया
कृष एन्क्लेव F/102
सीटीलाइट
सूरत 395 007. (गुजरात)
मो. 9427133069
Email : madhujain312@gmail.com

नारीलोक
देखने हेतु
Touch to open
www.abtmm.org

Touch to open
www.facebook.com/abtmmjain/

Touch to open
https://bit.ly/abtmmyoutube

कोषाध्यक्ष कार्यालय
रंजु लुणिया
लुणिया मार्केटिंग प्रा. लि.
बड़ा बाजार, छेरा बस स्टॉप के पास
शिलोंग 793 001. (मेघालय)
मो. 9436103330
Email: lmplshillong@gmail.com